IIM के एनुअल फेस्ट में बोले एक्सपर्ट

खुद को एक्सप्लोर करते रहिए कठिनाइयां ही आगे बढ़ाती हैं

सिटी रिपोर्टर. रायपुर

आईआईएम में शनिवार को एनुअल फेस्ट करमांता-24 की शुरुआत हुई। पहले दिन एक्सपर्ट टॉक, प्ले और कॉमेडी नाइट जैसे आयोजन हुए। प्रोग्राम में बैडमिंटन प्लेयर विजय लैंसी, लीडरशिप कोच एस वेंकटेश, माउंटेनियर सत्यरूप सिद्धांत, एक्टर अनिल चरणजीत ने स्टूडेंट्स को मोटिवेट किया। एक्ट्रेस जूही बब्बर सोनी ने नाटक विद लव, आप की सैयारा का मंचन किया। कॉमेडी नाइट में देवेश दीक्षित ने प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में डायरेक्टर डॉ. एम राम कुमार, मृणाल चावणा व अन्य मौजूद थे।

प्ले में दिखाया जिंदगी का उतार-चढ़ाव

एक्ट्रेस जूही बब्बर सोनी ने अपने लिखित, निर्देशित और अभिनीत नाटक "विद लव, आप की सैयारा' में जिंदगी के उतार-चढ़ाव, जद्दोजहद, समाज की एकल महिला की चुनौतियां और जिंदगी को आगे बढ़ाने में पैदा होने वाली मुश्किलों को मंच पर जीवंत किया। मंचन में उन्होंने दिखाया कि कैसे एक तलाकशुदा सफल लेखिका सैयारा अपनी किताब के लिए परेशान है। सैयारा दो बार शादी करती है और दोनों ही बार तलाक ले लेती है। उसी से उसकी जिंदगी बदल जाती है।

मैनेजमेंट के स्टूडेंट्स को मिले चार सक्सेस मंत्र

● *कंफर्ट जोन से बाहर निकलेंगे तभी ग्रोथ मिलेगी। यदि आपने गोल बनाया है और यदि अपना पूरा 100 प्रतिशत प्रयास करने के साथ उसे हासिल करने की इच्छा रखते हैं तो आपको कोई नहीं रोक सकता। आप जितनी अधिक तैयारी करेंगे, सफलता की संभावना भी अधिक होगी। बैडमिंटन ने मुझे अनुशासित और ध्यान केंद्रित करने में मदद की।* **-विजय लैंसी,** बैडमिंटन प्लेयर

● *एक्सप्लोर करें, नए लोगों से मिले और नया सोचें। आइडिया अकेले रहने से नहीं आता। ऐसी चीजें सोचे जो आपको मोटिवेट करें और एनर्जी दें। आप जो करना चाहते हैं उसमें एक्सपर्ट बनें। मेहनत का कोई ऑप्शन नहीं होता। शुरुआत करें, जर्नी की शुरुआत पहले कदम से ही होती है। फैलियर सफलता की ओर पहला स्टेप होता है।* **-एस वेंकटेश,** लीडरशिप कोच

● *कंसिस्टेंट से सक्सेस हो सकते है। गोल समझ में नहीं आ रहा है तो अपने बचपन को याद करें, नेचुरली जो दिमाग में आए, वही आपका गोल है। मुश्किलें ही अंत में आपके लिए फायदेमंद होती हैं। यदि काम सही न हो तो गिव-अप न करें, पेशेंस रखें। मैं 11वीं में दो बार फेल हुआ। उसे फेस किया और आगे बढ़ा।* **-अनिल चरणजीत,** एक्टर

● *लाइफ के डिफिकल्टीस को एंजॉय करें, लेकिन ध्यान दें कि कब रूकना है और पीछे हटना है। पीछे आने का मतलब यह नहीं कि आप हार गए। सपने पूरी होने की उम्मीद न रखें। मुझे अस्थमा की समस्या थी, लेकिन मैंने उसपर काम किया और कैपिसटी बढ़ाकर बिना इन्हेलर के पहाड़ चढ़ा।* **-सत्यरूप सिध्दांत,** माउंटेनियर

Dainik Bhaskar, 14 Jan 2024, P.04,(City Bhaskar)